बहुत ही सहज है राजयोग...

कभी-कभी आप कम्पयूटर पर काम करते हैं तो उस समय आप अन्दर से कोई फोल्डर या फाईल पर काम करते हैं ना कि अलग से टाईप करते हैं। ठीक उसी प्रकार हमारे संस्कारों में बहुत सारे पुराने फोल्डर्स वा फाईल्स (पुरानी आदतें, यादें, भूतकाल की बातें, दु:ख देने वाली बातें आदि-आदि) पड़े हुए हैं जो बीच-बीच में मन रूपी पर्दे पर आते रहते हैं। इसलिए आप कभी बहुत खुश होते हैं पुरानी बातें याद करके और कभी बहुत दु:खी होते हैं। जैसे कम्पयूटर में कोई फोल्डर को सर्च करने के लिए एक संकेत (क्ल्यू) का इस्तेमाल करते हैं। ठीक वैसे ही जब भी हम किसी भी व्यक्ति को देखते हैं जो बीस साल पहले मिला हो उसी समय उससे सम्बन्धित सभी पुरानी बातें याद आ जाती हैं।

पाँचवा संस्कार : आत्मा के मूल संस्कार - अन्तिम संस्कार आत्मा के मूल संस्कार के रूप में हैं। आत्मा मूल रूप से सातो गुणों से भरपूर है। ये संस्कार अनादि हैं, आत्मा के साथ-साथ आ जाते हैं। आज चार संस्कारों के कारण ही हमारा मूल संस्कार दब सा गया है। हम चाहते तो हैं कि हम खुश रहें, प्रेम स्वरूप रहें, लेकिन ऐसा हो नहीं पा रहा। कारण उसका स्वाभाविक है कि उपरोक्त चारो संस्कार बीच-बीच में जागृत हो जाते हैं जिसके कारण हम कार्य ठीक प्रकार से नहीं कर पाते।

ऐसा नहीं है आप हमेशा से बुरे हैं या ये आपकी नियति है। बल्कि इसे बदलने की गुंजाईश है क्योंकि इसको आपने ही विकसित किया है। आपने ही चारों संस्कार जैसे पूर्वजन्मों के संस्कार, माता-पिता से मिले हुए संस्कार आदि-आदि बनाये हैं। तो इन्हें बदला भी तो जा सकता है।

सभी भगवान को कोसते हैं कि आपने मेरा भाग्य कैसा लिख दिया!

जब परमात्मा ने आपको नीचे भेजा तो आपको दो चीजें उन्होंने गिफ्ट में दी। पहला विवेक (विज़डम), दूसरा स्वतन्त्रता (फ्रीडम)। कहने का तात्पर्य यह है कि परमात्मा ने कहा होगा कि मेरे पास इतना समय नहीं है कि मैं सभी के कर्मों को जज करूँ कि क्या सही किया, क्या गलत किया। इसलिए मैं तुमकों ये दोनों चीजें दे रहा हूँ, कि तुम खुद कर्म करने के लिए स्वतन्त्र हो।

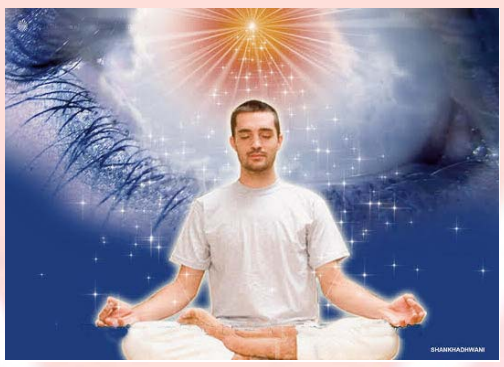

अगर गलत है , या सही होता है तो विवेकपूर्वक निर्णय भी कर सको। अर्थात् कर्म करने की स्वतन्त्रता दी और निर्णय करने के लिए बुद्धि भी दी। लेकिन आज का हाल आपसे छुपा नहीं है। सभी कर्म तो करना चाहते हैं और उसमें स्वतन्त्रता भी चाहते हैं लेकिन कर्म कैसा हो रहा है आप खुद बताओ! आज हमने अपनी स्वतन्त्रता के कारण ही इतनी सारी गलतियाँ की जिसके कारण विवेक शक्ति शून्य हो गई है। बस अब हमें क्या करना है कि अपनी बुद्धि का सॉफ्टवेयर पुनः डाउनलोड करना है। अब यदि आज के संसार से बुद्धि डाउनलोड करें तो उसमें वायरस अवश्य होगा। वायरस का अर्थ यहाँ यह है कि सबकी अपनी-अपनी बुद्धि है। कोई कहेगा यह सही, कोई कहेगा यह सही है। लेकिन कोई भी सही नहीं है, क्योंकि किसी की बुद्धि ठीक काम ही नहीं कर रही है। इसलिए हमें सुप्रीम इन्टरनेट से या परमात्मा से बुद्धि का सॉफ्टवेयर डाउनलोड करना पड़ेगा।

हमने आत्मा की सारी कहानी सुनी कि आत्मा का रूप क्या है, ज्योति बिन्दु, शरीर में आत्मा दोनों भृकुटि के मध्य हाइपोथेलेमस, पीनियल और पिट्यूटरी ग्रंथि के बीच में स्थित है। इसका घर परमधाम या ब्रह्मलोक है। अब प्रश्न यह उठता है कि आत्मा को शक्ति कैसे मिले अर्थात् उसकी बुद्धि कैसे खुले? उसके लिए उसे परमात्मा का सत्य परिचय चाहिए। लेकिन आज परमात्मा के बारे में इतनी सारी भ्रांतियां हैं कि उसके लिए हमें परमात्मा पर बहुत सारे तथ्य देने होंगे। इसलिए अगले अंक में हम परमात्मा के विषय में चर्चा करेंगे।

ओमशान्ति मीडिया वर्ग पहेली-17

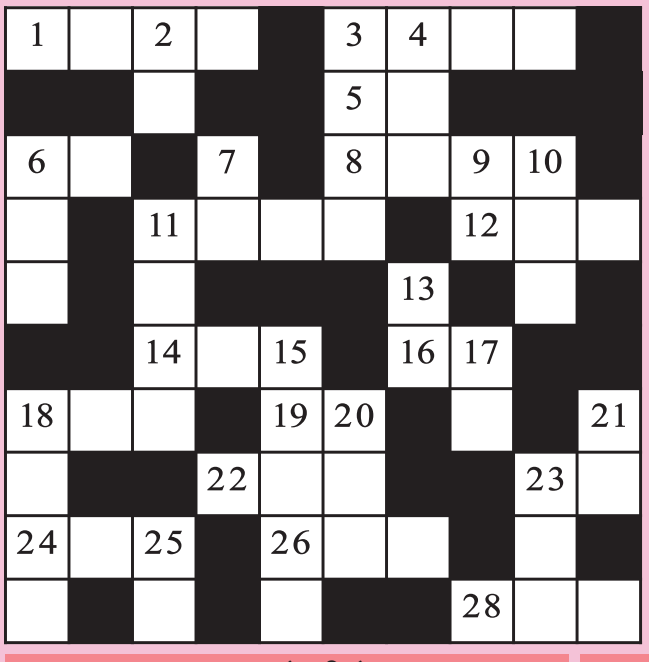

बनें विजेता : पहेली के कॉलम को काटकर व पेपर पर चिपकाकर उसके साथ उसका जवाब लिखकर हमें इस मीडिया के पीछे लिखे हुए पते पर भेजें। एक वर्ष के भीतर पूछे गए सभी पहेलियों में जिसका सबसे ज्यादा सही जवाब होगा उन्हें विजाताओं के लिस्ट में शामिल किया जाएगा और वर्ष के अंत में उन्हें आकर्षक ईनाम दिया जाएगा। इसलिए पहेली को ध्यान से पढ़िए, समझिए और भेज दीजिए हमारे पास उसका सही जवाब लिखकर और बनिए वर्ग पहेली के 'विजेता ऑफ द ईयर'।

पहेली की फोटो कॉपी या पोस्ट कार्ड पर भेजा गया पहेली का जवाब मान्य नहीं होगा। पहेली का जवाब भेजें तो उस लिफाफे पर आप अपना भी पूरा पता अच्छी लिखावट में लिखें, अपना मोबाइल नम्बर और हो सके तो अपना ई.मेल आईडी भी लिखकर भेंजें ताकि हमें पहेली का विजेता चुनने में कोई कठिनाई ना हो।

ऊपर से नीचे

2. द्वापर युग से अनेक मठ....की स्थापना शुरु हुई (2)
3. अद्वेत मत, एक समान विचार (4)
4. ईर्ष्या, द्वेष, नफरत (3)
6. तुम अभी एक....सेवा में लगाओ तो वहाँ तुम्हें लाखों मिलेगा (3)
7. रास्ता, वाट, पथ (2)
9. सूखी घास, तिनका, तृण (2)
10. ईमान, स्वाभिमान (3)
11. हल, परिणाम, उत्तर (4)
13. ....की छाया से बचना ज़रा, 5 विकार (2)
15. जिसके पास करोड़ों की सम्पत्ति हो, अत्यधिक धनी (5)
17. जान, प्राण, ताकत, ज़ोर (2)
18. कड़वा बोल, अप्रिय बोल (4)
20. दान, मुस्लिम धर्म का एक आवश्यक कर्म (3)
21. रवि, भानू, भास्कर, दिनकर, दिनेश (2)
23. आपत्ति, आफत, मुसीबत (3)
25. नाखून, बटा हुआ रेशमी धागा, डोर (2)

बायें से दायें

1. तुम अभी बिल्कुल....(किनारे) पर खड़े हो (4)
3. अपनी स्थिति को....बनाने के लिए पास्ट का चिंतन मत करो (4)
5. आने वाले....की तुम हो (2)
6. नाम....की बीमारी भी कड़ी बीमारी है (2)
8. ठीक-ठाक, सलामत, खैरियत (4)
11. राज़ी, अनुमति, संमत (4)
12. हवा, वायु, 5 तत्वों में से एक (3)
14. धर्मशील, धर्म सम्बन्धी, धर्म के अनुसार (3)
16. निरंतर बाप की....से पाप कटेंगे (2)
18. तन, मन, धन सहित इस यज्ञ में....जाना है, बलिहार, समर्पित, (3)
19. ....अमृतवेले उठ बाबा की याद में बैठना है, प्रतिदिन (2)
22. पुत्र, वत्स, बेटा (3)
23. उत्तम, श्रेष्ठ, पूज्य, एक सभ्य जाति (2)
24. मधुबन के इस....के तुम बहार हो (3)
26. भारत के उत्थान और....की कहानी सबको सुनाओ (3)
28. ....मिसल अपना चावल मुट्ठी सफल करना है (3)

- ब्र.कु.राजेश,शांतिवन

काठमाण्डू-नेपाल। पिताश्री ब्रह्मा बाबा के 47वीं पुण्य स्मृति दिवस पर श्रद्धा सुमन अर्पित करते हुए शांति तथा पुनर्निर्माण राज्य मंत्री दिप नारायण साह।

रूपवास-राज.। राजकीय माध्यमिक विद्यालय एक्टा के विद्यार्थियों को 'जीवन मूल्यों' पर सम्बोधित करने के बाद समूह चित्र में ब्र.कु. कनक, ब्र.कु. गीता तथा शिक्षकगण।

तोशाम-हरियाणा। शांति यात्रा को हरी झण्डी दिखाकर रवाना करते हुए आयकर आयुक्त राजेश नाफरिया, सरपंच देवराज गोयल, ब्र.कु. मंजू, ब्र.कु. निर्मला व अन्य।

कडप्पा। नये वर्ष के उपलक्ष्य पर आयोजित कार्यक्रम में कैंडल लाइटिंग करते हुए ब्र.कु. गीता व अन्य ब्र.कु. भाई बहनें।

नालागढ़-हि.प्र.। एस.एस. स्कूल में एन.एस.एस. कैम्प के छात्रों को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् ब्र.कु. राधा को सम्मानित करते हुए स्कूल के प्रिन्सीपल बृजेश जी व अन्य।

नवांशहर-पंजाब। सेंट्रल कोऑपरेटिव बैंक के सीनियर मैनेजर रेशम सिंह तथा अन्य अधिकारीगण ब्र.कु. परनीता को 'तनाव मुक्ति' कार्यक्रम के पश्चात् सम्मानित करते हुए।